क़दम

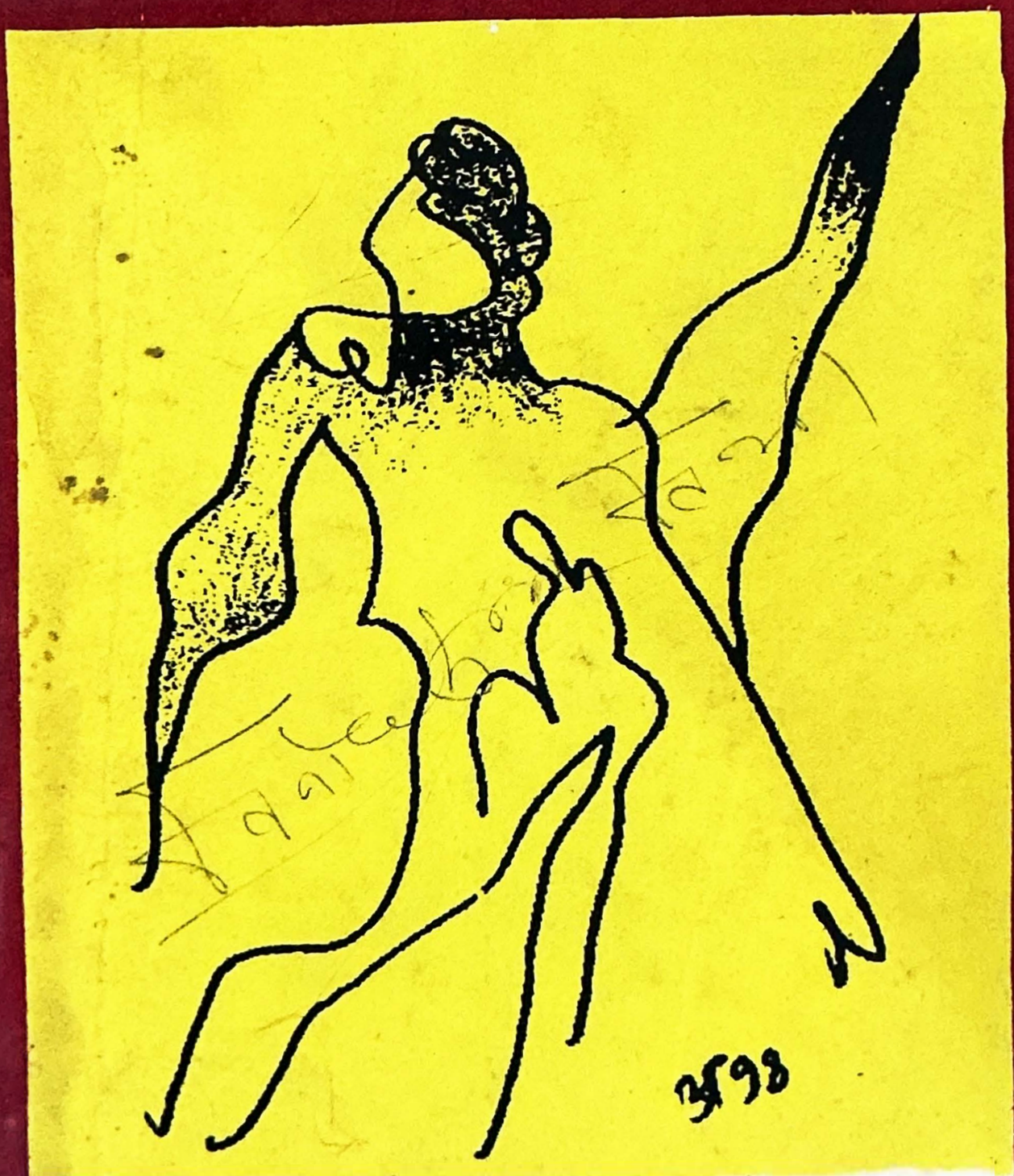

इस अंक में--

सुधीर विद्यार्थी ०रघुवंशमणि ०विष्णुचन्द्र शर्मा ०रामनिहाल गुंजन ०अली सरदार-जाफ़री ०शकील सिद्दीकी ०एडवर्ड सईद ०इम्रे सात्यूसिन्स्की ०रामकीर्ति शुक्ल ०रामकुमार कृषक ०ज्ञानेन्द्रपति ०सुधांशु कुमार मालवीय ०असग़र वजाहत ०अब्दुल-बिस्मिल्लाह ०मधुरेश ०प्रदीप दीक्षित ०हृषीकेश ०विमल वर्मा ०वीरेन्द्र मोहन ०भानुप्रकाश ०चमनलाल ०अक्षय गोजा ०रमणिका गुप्ता ०दिनेश कुशवाहा ०रामनारायण स्वामी ०अदम गोण्डवी ०कौशलेन्द्र पाण्डेय व अन्य

बुद्ध का मजाक उड़ा, बुद्ध मुस्क

यश मा

● इक उदास हँसी लिये बहुत छटपटाये
बुद्ध का मज़ाक उड़ा, बुद्ध मुस्कराये।
● बुद्ध पूर्णिमा को ही, हो गया अंधेरा
संतों के शासन में बुझ गया सबेरा
उस पर यह भ्रम है सौ सूर्य जगमगाये।
● समझदार लोग बिना काई के फिसले
मानवता देख रही खून भरे तसले
जख्मी इतिहास बोध पंख फड़फड़ाये।
● प्रेम का, अहिंसा का पाठ लड़खड़ाया
संसद में बैठ, एक शख्स बड़बड़ाया
अंधों की आँखों मे दृश्य झिलमिलाये।
● करुणा बीमार हुई, मौन हुए सपने
कैसा विज्ञान लगा राम नाम जपने
सच सुनकर बस्ती के लोग तिलमिलाये।
● प्रगतिशील मूल्यों की परिभाषा बदली
ऐसा विस्फोट हुआ दृष्टि पड़ी धुधली
चुक जाने पर खुद ही तर्क तमतमाये।
● हरे घाव लिये देह संस्कृति की नीली
राह क्या दिखायेगी बुझी हुई तीली
जिनमें थी आग वही शब्द थरथराये।
● कान खोल सुनती है सभ्यता धमाके
स्याह हुए जाते हैं बस्तियां इलाके
गाफ़िल संघर्षों ने नये गुल खिलाये।
● बिन रोटी के बहुमत कर रहा जुगाली
सौ नये परीक्षण हैं पेट मगर खाली
भूखा यह देश राष्ट्रगीत सिर्फ गाये।
● देश भक्ति का नुस्खा सिर चढ़ कर बोला
तन गया वही मुँह, जो अब तक था झोला
एक नहीं कितने ही अश्व हिनहिनाये।
इक उदास हँसी लिये बहुत झटपटाये
बुद्ध का मजाक उड़ा, बुद्ध मुस्कराये।

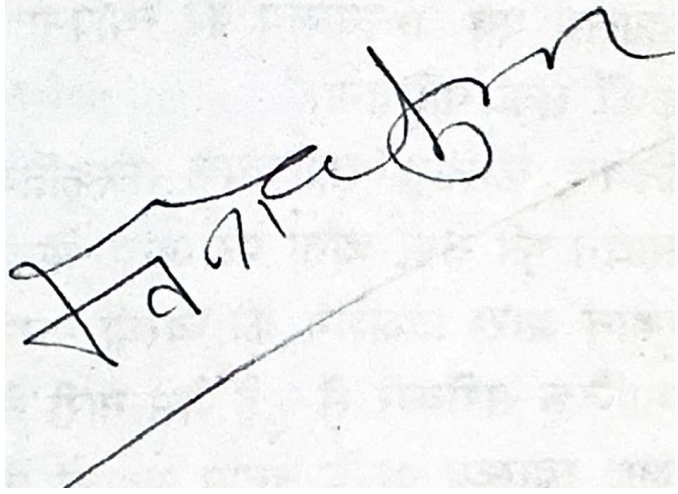

सव्यसाची, के.शिवराम कारन्त, का.नम्बूदरीपाद, हरिशप्रकाश त्यागी,
बनारसीदास खण्डेलवाल को कदम की श्रृंद्धांजलि।

राहुल सांकृत्यायन लोक संस्कृति संस्थान (पं.सं. २२३५/ए २-२३६१/९७)

क़दम के प्रकाशन पर संस्थान की शुभकामनाएँ

संस्थान के उद्देश

१- हिन्दी साहित्य के सृजन, संबर्धन, प्रचार-प्रसार के साथ राहुल सांकृत्यायन साहित्य का प्रचार तथा शोध परक कार्यों को आगे बढ़ाना।

२- लोक संस्कृति व लोक कलाओं का संरक्षण, संबर्धन एवं विस्तार।

३- साहित्य-कला-संस्कृति के माध्यम से साम्प्रदायिक सद्भाव, समता मूलक समाज एवं लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना के लिए वैज्ञानिक सोच का विस्तार।

४- साहित्य की विभिन्न विधाओं पर केन्द्रित विचार गोष्ठियों, कार्यशालाओं, प्रदर्शनियों एवं समारोहों के साथ-साथ नाट्य समारोहों का आयोजन तथा भविष्य में श्रेष्ठ कृतियों एवं प्रस्तुतियों को सम्मानित व पुरस्कृत करना।

५- पुस्कालय एवं वाचनालय की स्थापना तथा श्रेष्ठ पठनीय सामग्री को पाठकों तक पहुँचाना।

६- अनियत कालीन साहित्यिक-सांस्कृतिक पत्रिका का प्रकाशन तथा संसाधन की उपलब्धता पर अन्य श्रेष्ठ साहित्य प्रकाशित करना तथा संस्थान द्वारा प्रकाशन की व्वस्था करना।

सामाजिक सरोकार से जुड़े जैसे नारी चेतना, दलित चेतना, पर्यावरण, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि तमाम सवालों पर सकारात्मक पहल।

८- संस्थान के बहुआयामी उद्देयों की पूर्ति के लिए भूमि व भवन की व्यवस्था।

९- समानधर्मी साहित्यिक सांस्कृतिक संस्थाओं से समन्वय स्थापित करना तथा उनके क्रिया-कलापों को संस्थान के साथ जोड़ना व उन्हें प्रश्रय एवं संरक्षण प्रदान करना।

१०- हानि-लाभ निरपेक्ष के आधार उद्देश्यों के अनुरूप समाजसेवी संस्था के रूप में काम करना।

सचिव

२२३, निज़ामुद्दीनपुरा

मऊनाथ भंजन (मऊ)

संपादक

चन्द्रदेव राय, जयप्रकाश धूमकेतु

संपादन सहयोग

शिवकुमार पराग
सत्येन्द्र किशन
अब्दुल अजीम खाँ
संजय राय
विष्णुलाल गुप्त
उपेन्द्रनाथ मिश्र

सम्पर्क

~~जयप्रकाश धूमकेतु~~

२२३ - प्रकाश निकुंज
पावरहाउस रोड, निजामुद्दीनपुरा
मऊनाथभंजन, मऊ - २७५१०१ (उ०प्र०)
दूर भाष :: (०५४७) - २२३११३

रेखांकन :

असगर वजाहत

सहयोग राशि :

५०/- वार्षिक (दो अंक)
२५/- एक अंक
१०००/- आजीवन

प्रकाशक :

साहित्यिक- सांस्कृतिक संस्था 'मंथन' मऊनाभंजन, मऊ

कम्पोजिन्ग :

फहद कम्प्यूटर (फहीम बुकसेलर), मिर्जाहादीपुरा-मऊ

प्रिंटिंग

सरफराज ऑफ्सेट प्रेस-मऊ

इस अंक के रचनाकार-

०सुधीर विद्यार्थी, निकट बड़ा पावरहाउस, बीसलपुर, पीलीभीत
०रघुवंशमणि, ३६५-इस्माइलगंज, अमानीगंज, फैजाबाद ०विष्णुचन्द शर्मा, इ-११, सादपुर, दिल्ली ०रामनिहाल गुंजन, नया शीतल टोला, आरा (बिहार)
०मधुरेश, ब्रह्मनन्द पाण्डेय का मकान, भाँजी टोला, बदायूँ ०शकील सिद्दीकी, एम.आई.जी. ३१७, फेज-२ टिकैतराय आवासीय योजना, मोहान रोड, लखनऊ
०दुर्गाप्रसाद गुप्त, आई-२२७, अंसारीनगर (पश्चिम) नई दिल्ली
०चमन लाल, हिन्दी विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला, पंजाब ०हृषीकेश, ३५-न्यू आमघाट कालोनी, गाजीपुर ०ज्ञानेन्द्रपति, बी-३/१२ अन्नपूर्णानगर, विद्यापीठ मार्ग, वाराणसी ०रामकुमार कृषक, सी-३/५४, सादतपुर विस्तार, नईदिल्ली ०सुधांशु कुमार मालवीय, २८-अमरनाथझा मार्ग, इलाहाबाद
०अक्षय गोजा, चाँदपोल गेट के पास जोधपुर ०रमणिका गुप्ता, मेन रोड, हजारीबाग (बिहार) ०अब्दुल बिस्मिल्लाह, २९-मुजीबबाग, जामिया मिल्लिया कैम्पस, ओखला, नई दिल्ली ०शैलेन्द्र/आस्कर, ६-डुमराव कालोनी, अस्सी, वाराणसी ०वीरेन्द्र मोहन, हिन्दी विभाग हरी सिंह गौर विश्वविद्यालय सागर
०असगर वजाहत, हिन्दी विभाग, जामिया मिल्लिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
०प्रदीप दीक्षित, जे. २७३, आशियाना पो.आ., एल.डी.ए. लखनऊ
०कौशलेन्द्र पाण्डेय, १३०-मारुतिपुरम्, लखनऊ ०रामबदन राय, जोगा मुसाहिब, गाजीपुर ०अदम गोण्डवी, आटा, परसपुर, गोण्डा ०अवनीद्र कमल, अमर उजाला, सिकन्दरा रोड, आगरा ० रामकीर्ति शुक्ल, २७-कौशलेशनगर, सुन्दरपुर, वाराणसी ०कुमार दिनेश प्रियमन, ३६२-आवास विकास कालोनी, आजादनगर, उन्नाव ०दिनेश कुशवाह, हिन्दी विभाग, ए.पी.एस. विश्वविद्यालय रीवां ०शतानन्द, ब्रह्मण टोला, दक्खिन, मऊनाथभंजन, मऊ
०मुन्नेबाबू त्रिपाठी, एल.आई.जी., बी १८/३ गोविन्दपुर, इलाहाबाद
०राजीव रंजन, पाश पुस्तकालय, पुलिस लाइन, करनाल, हरियाना
०अनवर सुहैल, ए-१, बीना, सोनभद्र ०वीरेन्द्र कुमार वसु, एल.के. कालेज सीतामढ़ी (बिहार) ०मोतीलाल, ई-२२४, बड़ामुड़ा, राउरकेला
०रामनारायण स्वामी, सी ३/५४, सादतपुरा विस्तार नई दिल्ली ०इम्तेयाज नदीम, औरंगाबाद, मऊनाथभंजन, मऊ ०एबाद अनीस, कोपागंज, मऊ
०भानुप्रकाश, ३६-एल.ई.ए.आर.आई. सेक्टर बरबेड़ा, भेल, भोपाल
०संजय राय, कसारा, मऊ ०विमल वर्मा, एच/१३, एल.आई.जी.ई. स्टेट ८१/१, आर.पी. रोड, काशीपुर, कलकत्ता ०चन्द्रदेव यादव, हिन्दी विभाग, जामिया मिल्लिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ०शिवकुमार गुप्त पराग, संयुक्त क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, पिड़वलमोड कल्यानपुर, मऊ ०अंशुरानी, हिमालयन ट्रेडर्स, ब्रह्मण टोला दक्खिन, मऊ

रचनाक्रम

संपादकीय ३

आलेख : लघु पत्रिकायें भूमिका तय करें ० **सुधीर विद्यार्थी** ५

बाजार से गुजरते हुए ० **रंघुवंशमणि** १०

उत्तरदायित्व कई लादे हैं एक साथ ० **विष्णुचन्द शर्मा** १४

निराला की गज़लें ० **रामनिहाल गुंजन** २१

निराला के उपन्यास ० **मधुरेश** २७

आत्मकथ्य : घर से शुरू हुई बग़ावत ० **अली सरदार जाफ़री** ४१

आलेख : अली सरदार जाफरीः एक व्यक्ति के अनेक आयाम ० **शकील सिद्दीकी** ४६

नज्में : अली सरदार जाफरी की नज़्में ० लिप्या ० **शकील सिद्दीकी** ५२

आलेख : दलित यातना के हजार वर्ष एक साथ ० **दुर्गाप्रसाद गुप्त** ५६

दलित साहित्य विचारणीय मुद्दे ० **चमन लाल** ६३

रचना के बदलते आयामः अरुन्धती रॉय का उपन्यास

'द. गॉर्ड ऑफ स्माल थिंग्ज़'- शोहरत और कमाई का अजूबा ० **हृषीकेश** ६८

कविताएँ : **ज्ञानेन्दपति** ८०

रामकुमार कृषक ८३

सुधांशु कुमार मालवीय ८७

अक्षय गोजा ९७

रमणिका गुप्ता ९९

देशान्तर : स्पेनिश कवि दामा सों आलोसो की कविता ० **अनु. शैलेन्द्र/आस्कर** १०१

हंगोरियन कहानी 'बर्बर लोग' मोरित्स जिग्मोंद

अनु. अब्दुल बिस्मिल्लाह/मारिया मेज्यैश १०२

आलेख : समकालीन हिन्दी कहानी ० **वीरेन्द्र मोहन** ११६

कहानी : बेनाम आदमी की कहानियाँ

एक छोटे आदमी की वसीअत > ० **असगर वजाहत** १२७

मृगतृष्णा ० **पदीप दीक्षित** १३०

विकल्प ० **कौशलेन्द्र पाण्डेय** १४६

आलीशान इमारत का खण्डर ० **रामबदन राय** १५१

साक्षात्कार : मेरी पृष्टभूमि विस्थापनाओं की पूरी श्रृंखला है

एडवर्ड सईद >< इम्रे साल्यूसिज़्की ० **अनु. रामकीर्ति शुक्ल** १६४

गीतकारों को आलोचना की भीख नहीं माँगनी चाहिए

अदम गोण्डवी >< अवनीद कमल १८६

आलेख : समकालीन कविता : नई सुबह की तलाश ० **कुमार दिनेश प्रियमन** १६२

कविताएँ : **मुन्नेबाबू त्रिपाठी** १६७

राजीव रंजन १६६

अनवर सुहैल २०१

वीरेन्द्र कुमार वसु २०४

मोतीलाल २०५

शिवकुमार गुप्त पराग २०६

अंशुरानी २०८

गज़लें : **रामनारायण स्वामी** २११

इम्तेयाज़ नदीम २१५

स्मृतिशेष : **एबाद अनीस की गज़लें** २१८

आलेख : बनाफर चन्द्र की कहानियों में सामाजिक न्याय ० **भानुप्रकाश** २२१

समीक्षा : किसान जीवन की करूण गाथा ० **संजय राय** २२७

आत्मध्वंश की विडम्बना ० **विमल वर्मा** २३२

लोक रंग से युक्त गज़लें ० **चन्ददेव यादव** २३६

संस्मरण : भारतीय ऋषि परम्परा के आधुनिक प्रतीक ०**त्रिलोचन शास्त्री** ० **शतानन्द** २४०

तुम्हारे आगे मिशालों की आबरू क्या है **दिनेश कुशवाह** २४४

★★★★

सम्पादकीय

आज के समय और परिवेश को लेकर स्वस्थ चेतनासंपन्न आदमी बेहद उदास और चिन्ताकुल है। सब कुछ अपने हाथ से छूटता हुआ नजर आ रहा है। चतुर्दिक एक अजीब लाचारगी पसरती जा रही है। जनविरोधी आर्थिकनीति के चलते बढ़ती मँहगाई, बेरोजगारी, असुरक्षा, भ्रष्टव्यवस्था की बेकाबू होती जा रही दुर्वह स्थितियों से जनजीवन त्रस्त और संकटापन्न है। समाज का अपराधीकरण करने की प्रवृत्ति उभार पर है। प्रबुद्ध वर्ग दिनानुदिन बढ़ती जा रही वैचारिक संकीर्णता के वर्चस्व से भयग्रस्त है। विचार की शक्ति निष्प्रभ और असहाय नजर आ रही है। लम्बे राजनीतिक सांस्कृतिक आन्दोलन के माध्यम से अर्जित एवं विकसित वैज्ञानिक समझ, मानवतावादी दृष्टि और प्रगतिशील चेतना को हाशिये में डाल देने की परम्परावादी मूढ़ाग्रही चेतना का दुस्साहस बढ़ता जा रहा है। सामाजिक न्याय, राष्ट्रवाद, सांस्कृतिक अस्मिता जैसे मोहक नारों से सत्ता की कुर्सी तक पहुँचने की राजनीतिक ठगी की कलाबाजी शिखर उत्कर्ष पर है। जाति-धर्म के नाम पर सामाजिक विघटन और साम्प्रदायिक मनोमालिन्य को प्रज्ज्वलित कर रहे आज के बौने नेतृत्व की काली करतूतों से देश-हित, जन-हित और इंसानियत के भविष्य के सामने प्रश्नचिन्ह खड़ा हो रहा है। आज पूरे विश्व में पारमाणविक शक्ति संग्रह की अन्धी होड़ ज्वार पर है। उद्देश्य चाहे दूसरों पर धौंस जमाने का हो या आत्मरक्षा का, परन्तु इतना तो तय है कि यह सब कुछ महाविनाश की तैयारी का है। कौन जाने कब किस पर उन्मादजन्य पागलपन का भूत सवार हो और देखते देखते सब कुछ महाप्रलय का शिकार हो जाय। वस्तुस्थिति यह है कि एक खौफनाक अँधेरे का साम्राज्य सर्वग्रासी बनता जा रहा है। सब कुछ अनिश्चयपूर्ण दीख रहा है और बुद्धिजीवी तथा रचनाकार अपने को बहुत कुछ हतप्रभ और निरुपाय पा रहा है। पागलपन की हद तक पहुँची वैचारिक असहिष्णुता आज की कठिन चुनौती के रूप में अंगद का पाँव बनती जा रही है।

समय तो थोड़ा-बहुत कठिन और भयावह सदैव रहा है। परन्तु आज हम इतिहास के सबसे खतरनाक दौर से गुजर रहे हैं। मूल्य और आदर्श की बातें आसमानी लगने लगी हैं। चुनावी राजनीति के छलछद्म भरे हथकण्डे आदमी के भीतर के त्याग और पुरुषार्थ के भाव को मारकर अवैध उपलब्धियों की ललक पैदा कर रहे हैं। राष्ट्रीय चरित्र के क्षरण की योजनाबद्ध तैयारी चल रही है। मानवीय एकता के बोध के समूल विनाश का प्रयास चल रहा है और जन-जन के बीच अभेद्य दीवारें खड़ी की जा रही हैं। लगता है, आज के आदमी का सारा पुरुषार्थ अपने अपने लिए अधिकतम भोग का साधन जुटाने के निकृष्टम उद्देश्य तक सीमित रह गया है और आत्मिक चेतना व मानवीय संवेदना के लिए कहीं कोई गुंजाइश न रहने देने का जुनून हम पर सवार है। लगातार जनपक्षीय सपनों और उम्मीदों को मिटाने की साजिशें चल रही हैं तथा भावी पीढ़ी के भविष्य को धुँधला बनाया जा रहा है। समय के ऐसे खतरनाक मोड़ पर समकालीन चुनौतियों से स्वस्थ होकर